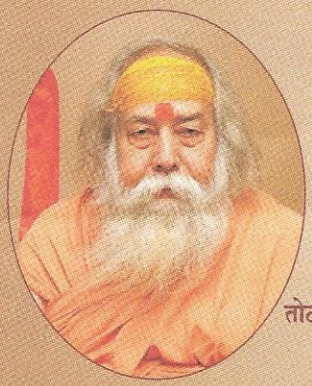

अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं
द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

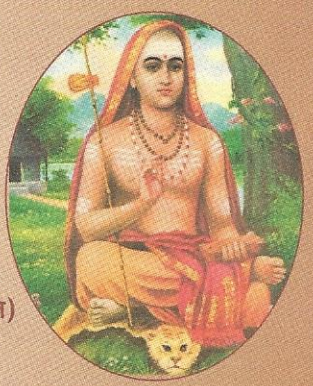

ज्योतिर्मठ
तोटकाचार्य गुफा, चमोली, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : ०१३८९-२२२१८५

श्रीशारदापीठम्
द्वारका-३६१३३५, देवभूमि द्वारका (गुजरात)
दूरभाष : ०२८९२-२३४०६४

www.jagadgurushankaracharya.org

क्रमांक :

दिनांक : .....

स्थल : .....

शुभाशीर्वचांशि

श्री कैलाश चन्द्र शर्मा द्वारा विरचित श्रीहनुमान-चरित-मानस के चतुर्थ संस्करण की अग्रिम प्रति को देख कर हार्दिक प्रसन्नता हुई है। हमारे जयपुर चातुर्मास्य के अवसर पर भी ब्रह्मसूत्र, उपनिषदों, श्रीमद् भगवद् गीता, अपरोक्षानुभूति, विवेक-चूड़ामणि आदि वेदान्तपरक ग्रन्थों का सटीक, सरल एवं सरस पद्यानुवाद प्रस्तुत करके श्री कैलाश चन्द्र शर्मा ने हमें आह्लादित किया था और हमने प्रसन्न हो कर इन्हें शुभाशीष दिया था। इस प्रकाश्यमान ग्रन्थ श्रीहनुमान-चरित-मानस के प्रतिपाद्य भगवान श्रीहनुमानजी हैं तथा इसमें उनका वेदान्तस्वरूप विशेष रूप से प्रतिपादित हुआ है, जो वन्दनाकाण्ड के इस दोहे से बीजरूप मे इंगित हो जाता है कि **"राम स्वयं परब्रह्म हैं हनुमत ब्रह्मविचार। भरत लखन शत्रुघ्न सिय तेहिं विचार चर चार।।"** चूँकि वेदान्तवेद्य ब्रह्म विचारस्वरूप ही होता है, अतः हनुमानजी को ब्रह्मविचार बतला कर श्रीरामजी के साथ इनका अभेद सिद्ध करना ही विभक्तिरहित शुद्ध भक्ति एवं शुद्ध ज्ञान का अभेद सिद्ध करना है, जो सर्वथा शास्त्रसम्मत एवं इष्ट है तथा इस ग्रन्थ में सर्वत्र अनुस्यूत हुआ दृष्टिगोचर होता है।

मनुष्य जाति के कल्याणार्थ, जगद्गुरु भगवान् महादेव ने ही श्रीहनुमान जी के रूप में अवतरित होकर, आत्मस्वरूपा भक्ति, सर्वथा निःस्वार्थ सेवा एवं अनुपम बल-बुद्धि-पराक्रमादि के अधिष्ठानत्व के उपरान्त भी अमानतादि अलौकिक आदर्शों का प्रतिपादन कर के, श्रीराम के संकटों का मोचन करते हुए, रामराज्य की स्थापना को संभव बनाया था।

भारत देश भगवान श्रीराम एवं श्रीहनुमानजी के चरित्रों से सदैव अनुप्राणित एवं प्रेरित होता रहा है। अब तक श्रीहनुमानजी के चरित्रों पर विशेष सामग्री उपलब्ध नहीं थी किन्तु श्रीहनुमान-चरित-मानस ने इस अभाव को पूरा कर के महान उद्देश्य को पूरा किया है, जिसके लिए श्री कैलाश चन्द्र शर्मा हमारे विशेष आशीर्वाद, साधुवाद एवं वात्सल्य के अधिकारी होगए हैं। प्रतीत होता है कि रामकाज करने के लिए, श्रीराम-मन्दिर निर्माण के पूर्व यह श्रीहनुमानजी का वाङ्मयावतार हुआ है, जो सर्वथा शुभ एवं मंगल का प्रतीक है। अस्तु।

कैलाश चन्द्र शर्मा हमारे प्रिय एवं सद्गुणी शिष्य हैं जिन्होंने गृहस्थ होते हुए भी, लोककल्याण की भावना से अपनी सारस्वत-साधना द्वारा सद्ग्रन्थों का प्रणयन एवं सृजन कर के हमारे गुरुत्व को गौरवान्वित किया है एवं सुखद अनुभूति प्रदान की हैं। अतः प्रकाश्यमान ग्रन्थ श्रीहनुमान-चरित-मानस की निर्विघ्नता के लिए एवं श्री कैलाश चन्द्र शर्मा पर भगवत्वात्सल्य निरन्तर बने रहने के लिए भगवान् चन्द्रमौलीश्वर से प्रार्थना करते हुए, मंगलकामनापूर्वक श्री शर्मा को हमारे भूरिशः शुभाशीर्वाद हैं।

शुभैषी

चैत्र शु.11/2074, विक्रमी
दि.-07/04/2017

स्वरूपानन्द सरस्वती

स्वामी स्वरूपानन्दसरस्वती
जगद्गुरु शङ्कराचार्य (ज्योतिष्पीठ/ द्वारका शारदापीठ)